Lecture No. 20

Date: 23.07.2020



Department of History,
D.B. College, Jaynagar, Madhubani,
L.N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga.

By:- Dr. Madan Paswan
Assistant Professor.

drpmadanhst@gmail.com
8709493720.

Class :- B.A. Part-I (Hons.) Paper- 1st

Syllabus: Unit-I: Background and Beginning

(ii) Sources for the Study of Ancient Indian History.

## प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोत :

प्राचीन इतिहास के स्रोत के रूप में पर्याप्त मात्रा में साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध हैं। साहित्यिक स्रोतों को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं :-

(क) धार्मिक साहित्य,
(ख) धर्मेतर साहित्य।

धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत ब्राह्मण धर्मग्रन्थों में विश्व में सबसे प्राचीन व श्रेष्ठ वेद हैं। वेद शब्द विद् धातु से बना है। इसे अपौरुषेय अथवा ईश्वर प्रदत्त माना गया है। वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' है। वेदों की संख्या चार है—

(क) ऋग्वेद,
(ख) सामवेद,
(ग) यजुर्वेद और
(घ) अथर्ववेद।

ऋग्वेद दुनिया की सबसे प्राचीनतम् रचना है। यह भारत तथा भारतेत्तर प्रदेशों के आर्यों के इतिहास, भाषा, धर्म एवं उनकी संस्कृति पर प्रकाश डालता है। इतिहासकारों की मान्यता है कि ऋग्वेद की रचना आर्यों ने पंजाब में की थी, जब वे अफगानिस्तान से लेकर गंगा-यमुना के प्रदेश तक फैले थे। इस ग्रंथ में 10 मण्डल तथा 1028 सूक्त हैं। ऋचाओं की संख्या 10,580 है।

Continue.....

* By:- Dr. Madan Paswan
Subject : History.



प्राचीन भारतीय............

ऋग्वेद की कुछ हस्तलिखित प्रतियों में परिशिष्ट जुड़े मिलते हैं, जिनको 'खिल' कहते हैं। ऋग्वेद के 8वें मण्डल के अन्त में एक परिशिष्ट है जिसे 'बालखिल्य' सूक्त कहते हैं। इस ग्रंथ के संकलनकर्ता महर्षि वेदव्यास थे।

**सामवेद** : 'साम' का शाब्दिक अर्थ है 'गान'। सामवेद ऐसा वेद है जिसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते हुए गाये जाते हैं। इसमे कुल 75 मंत्र मौलिक हैं, शेष सभी मंत्र ऋग्वेद से लिये गये हैं। प्राचीन भारत में जो विशेषज्ञ गाते थे, उन्हें 'उद्गाता' कहते थे। सामवेद के दो भाग हैं— (क) पूर्वार्चिक, (ख) उत्तरार्चिक।

इस वेद को भारतीय संगीत का 'उत्स' कहा गया है।

**वेदों से संबंधित ब्राह्मण** :–

1. ऋग्वेद – ऐतरेय तथा कौषीतकि
2. सामवेद – पंचविंश, षड्विंश, जैमिनीय
3. शुक्ल यजुर्वेद – शतपथ
4. कृष्ण यजुर्वेद – तैत्तिरीय
5. अथर्ववेद – गोपथ.

**यजुर्वेद** : प्रस्तुत ग्रंथ दो भागों में बाँटा है— (a) कृष्ण यजुर्वेद, (b) शुक्ल यजुर्वेद। जिन पुरोहितों ने इनकी रचना की उन्हें अध्वर्यु के नाम से अभिहित किया गया है। ये यज्ञीय कर्मकाण्ड की सामग्री प्रस्तुत करते हैं। यजुर्वेद में कई प्रकार के यज्ञों का विधान उल्लिखित है, जैसे— वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, अग्निहोत्र, सोमयाग, सौमित्राणि, चातुर्मास, दशपूर्ण मास आदि। इस वेद पर सबसे अधिक भाष्य लिखे गये हैं।

Continue............

* By:- Dr. Madan Paswan
Subject: History.

Date: 23.07.2020

(3)

प्राचीन भारतीय .....

अथर्ववेद : इस वेद की रचना अथर्व ऋषि ने की थी। अथर्ववेद का विभाजन मण्डलों में न होकर कांडों में है। इसमें २० काण्ड हैं। इसमें ब्रह्मज्ञान, धर्म, समाज-निष्ठा, औषधि प्रयोग, शत्रु-दमन, रोग निवारण, मंत्र-तंत्र, टोना-टोटका आदि अनेक विषय अन्तर्निहित हैं। इसमें ७३१ मंत्र तथा लगभग ६००० पद्य हैं। इन-चार वेदों को 'संहिता' कहा गया है। प्रथम तीन ग्रंथों अर्थात् ऋक्, साम तथा यजुर्वेद को संयुक्त रूप से 'त्रयी' की संज्ञा दी गई है।

ब्राह्मण : समय बीतने के पश्चात् समाज में यज्ञों एवं कर्मकाण्डों की प्रतिष्ठा बढ़ती गई। इनके विधान तथा इनकी क्रियाओं को समझाने के लिए एक नये साहित्य का आविर्भाव हुआ, जो ब्रह्म साहित्य के नाम से विख्यात है। यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ- 'ब्राह्मण' कहलाये। ज्ञान-याज्ञिक विधियों की पृथक-पृथक व्याख्या करने के लिए अनेक ब्राह्मण ग्रंथ हैं। प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण हैं।

आरण्यक : आरण्यक ग्रन्थ ब्राह्मण ग्रंथ का पूरक है। इसकी रचना 'अरण्यों (जंगल) में वानप्रस्थों (वनमें रहने वाले तपस्वी) ने की थी। आरण्यकों ने कोरे यज्ञवाद के स्थान पर चिंतन-शील ज्ञान के पक्ष को अधिक महत्व दिया है। इस प्रकार आरण्यकों में उस

वेदों से सम्बन्धित आरण्यक :-

| | |
|---|---|
| 1. वेद | —आरण्यक |
| 2. ऋग्वेद | —ऐतरेय, कौषीतकि |
| 3. सामवेद | —जैमिनीय, छान्दोग्य |
| 4. यजुर्वेद | —बृहदारण्यक, मैत्रायणी |
| 5. अथर्ववेद | —कोई आरण्यक नहीं। |

ज्ञानमार्गी विचारधारा का विकास तो सिर्फ बीजारोपण होता है जिसका विकास उपनिषदों में दिखता है।

Continue.....